जुलाई २०२०-जनवरी २०२१
(संयुक्तांक)

ISSN : 2229-5585

यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी सूची में सम्मिलित
सान्दर्भिक शोध-पत्रिका

नमन Naman

सम्पादक

प्रो. श्रद्धा सिंह • डॉ. हिमांशु शेखर सिंह

वर्ष : १४

अंक : २३-२४

जौनपुर जनपद से प्राप्त

कृष्ण-लोहित एवं कृष्ण-लेपित मृद्भाण्ड-परम्पराएँ

प्रो. प्रवीन कुमार मिश्र *

जौनपुर जनपद के विभिन्न सर्वेक्षित पुरास्थलों से प्राप्त मृद्भाण्ड- प्रकारों के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जौनपुर में एक लम्बे समय से ही मृद्भाण्ड उद्योग परम्परा का विकसित रूप प्रचलन में आ चुका था। यहाँ से प्राप्त विभिन्न पात्र-प्रकारों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनपद में प्रायः कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा के समय से ही किसी न किसी रूप में मानव इस क्षेत्र में निवास कर रहा था।

कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड (बी०आर०डब्ल्यू०) परम्परा– कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा से तात्पर्य उस पात्र परम्परा से है, जिसके अन्दर तथा मुँह के पास काले रंग का तथा शेष भाग (बाह्य) लाल रंग का होता है। विभिन्न प्रयोगशालाओं में किये गये अनुसंधानों से यह स्पष्ट होता है कि इन पात्रों को पकाने के समय भट्ठी (आवाँ) में इनको उलटकर रखा जाता था, जिससे अंदर और मुँह का भाग अपचयन के कारण काला और बाह्य भाग ऑक्सीकरण के फलस्वरूप लाल हो जाता था। इस प्रकार का मृद्भाण्ड सर्वप्रथम ह्वीलर[1] को ब्रह्मगिरि (१४° ३२ उ०, ७६° ४७ पू०) जिला चित्रदुर्ग कर्नाटक के उत्खनन से महापाषाणकालीन शवाधानों में सम्बद्ध प्राप्त हुआ था। ह्वीलर ने स्तर-विन्यास के आधार पर कृष्ण एवं लोहित मृद्भाण्ड का समय द्वितीय शताब्दी- प्रथम शताब्दी ई. निर्धारित किया।

कालान्तर में, १९५४-५५ में, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित अहाड़[2] (२४° ४२' उ०, ७३° ४६" पू०) के उत्खनन से ७ मीटर मोटे सांस्कृतिक जमाव से मृद्भाण्ड का प्रमाण मिला, जिसकी प्राचीनता लगभग २००० ई०पू० निर्धारित की गयी। इसके कृष्ण-लोहित पश्चात् लोथल[3] (२२° ३१' उ०, ७५° १२' पू०) जिला अहमदनगर, गुजरात के उत्खनन से इसके प्रारंभिक हड़प्पीय स्तर से कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा का प्रमाण मिला। कार्बन तिथि के आधार पर लोथल से प्राप्त इन प्रारंभिक अवशेषों का समय २४५० ई०पू० निर्धारित किया गया। इस प्रकार, कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड की प्राचीनता ताम्रपाषाण संस्कृति एवं आद्य ऐतिहासिक काल तक निर्धारित की गयी।

कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा का प्रमाण उ०प्र० राजस्थान, पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, पंजाब के विभिन्न पुरास्थलों के उत्खनन से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के साथ सम्बद्ध मिला है। राजस्थान के नोह[4] (जिला भरतपुर) एवं पश्चिमी उ०प्र० के अतरंजीखेड़ा[5] (जिला एटा) के उत्खनन से इस प्रकार के मृद्भाण्ड का प्रमाण स्वतंत्र रूप से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड-परम्परा के नीचे के स्तर से प्राप्त हुआ है। अतरंजीखेड़ा के चित्रित धूसर मृद्भाण्ड का समय लगभग ११०० ई०पू० निर्धारित किया गया है। यहाँ उल्लेखनीय है कि नोह एवं अतरंजीखेड़ा से प्राप्त कृष्ण-लोहित मृद्भाण्डों पर चित्रण नहीं है। चित्रित कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं पश्चिमी बंगाल से प्राप्त हुये हैं। उत्तर प्रदेश में कौशाम्बी (इलाहाबाद), सोहगौरा (गोरखपुर), खैराडीह (बलिया), बिहार में चिरांद (सारन), सोनपुर (गया) एवं पश्चिमी

* इतिहास विभाग- गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

बंगाल में पाण्डराजारढीबी (बर्दवान) से प्राप्त हुये हैं।[6] चिरांद (सारन) में कार्बन-तिथि के आधार पर इसकी प्राचीनता १६०० ई०पू० निर्धारित की गयी है तथा नरहन[7] (गोरखपुर) से प्राप्त मृद्भाण्डों, जिस पर सफेद रंग से चित्रकारी है, इसका समय लगभग १३०० ई०पू०-७०० ई०पू० निर्धारित किया गया है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि यह मृद्भाण्ड कर्नाटक की महापाषाण संस्कृति से सामान्य रूप से सम्बद्ध है। इन पुरास्थलों में तेक्कलकोटा[8] (बेल्लारी) आदि स्थलों का नाम प्रमुख है। कर्नाटक में ही एक दूसरा प्रमुख स्थल पिण्डलीहल[9] है, जहाँ कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड नवपाषाण कालीन स्तर से प्राप्त हुआ है। के०एम० श्रीवास्तव[10] ने कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा की प्राप्ति के आधार पर भारतवर्ष को छः भौगोलिक इकाइयों में विभाजित किया है- (१) गुजरात, (२) द०पू० राजस्थान एवं मध्य प्रदेश, (३) पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं पश्चिमी बंगाल, (४) पंजाब, पश्चिमी उ०प्र० एवं उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान, (५) महाराष्ट्र एवं उत्तरी कर्नाटक तथा (६) दक्षिणी कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल एवं उड़ीसा।

कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है– (अ) सादा कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड तथा (ब) चित्रित कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड। चित्रित कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड को पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है- (अ) दक्षिण-पूर्वी राजस्थान एवं मध्य भारत की चित्रित कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड तथा (ब) पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं बंगाल का चित्रित कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड। इसी प्रकार, सादे कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड को पुनः चार उपसमूहों में विभाजित किया गया है-[11]

(अ) प्राक् चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के सन्दर्भ में।
(ब) प्राक् उत्तरी काली चमकीली मृद्भाण्ड के सन्दर्भ में।
(स) चित्रित धूसर मृद्भाण्ड एवं उत्तरी काली चमकीली मृद्भाण्ड के साथ सम्बद्ध।
(द) महापाषाणकालीन संस्कृति के साथ सम्बद्ध।

इसी प्रकार, विंध्य-मध्य गंगा के मैदानी भाग से सम्बद्ध पुरास्थलों से कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड तीन स्तर पर विन्यासिक सन्दर्भ में प्राप्त हुये हैं-

(१) विंध्य एवं मध्यगंगा के पुरास्थलों से नवपाषाणिक संदर्भ में कोलडिहवा, लहुरादेवा एवं चिरांद।
(२) ताम्र-पाषाणकाल के सन्दर्भ में सोहगौरा, नरहन, खैराडीह, सेनुवार, ताराडीह, चिरांद एवं चेचर आदि।
(३) प्राक् उत्तरी-काली चमकीली मृद्भाण्ड-संस्कृति के सन्दर्भ में श्रृणवेरपुर, प्रहलादपुर राजस्थान, श्रावस्ती, सोनपुर आदि।

जौनपुर में भी अनेक पुरास्थलों से विवेच्य पात्र-परम्परा के साक्ष्य प्रस्तुत हुये है, जिनमें प्रमुख रूप से लोहे का डीह, बिलोई, सियराराइ, डाडी, सरायभोगी, चौवान, कुड़ियाघाट (कठवतिया गाँव), सारीपुर, मौरी, बजरा टीकर, भरही कोट, माझीपुर की कोट, महादेवा, केराकत आदि उल्लेखनीय है। इन सभी पुरास्थलों के सर्वेक्षण के दौरान पर्याप्त संख्या में कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड-परम्परा के पात्र उपलब्ध हुये है, जिससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि यह जनपद की एक प्रमुख मृद्भाण्ड-परम्परा थी। इन मृद्भाण्ड-परम्पराओं में प्रमुख प्रकार घड़े, कटोरे एवं थालियाँ हैं।